IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"डॉ0 राधाकृष्णन् के शैक्षिक विचारों की आधुनिक भारतीय शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में सार्थकता"

हरेन्द्र कुमार शर्मा

शोधार्थी, शिक्षा संकाय, पैसिफिक एकेडमी ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर

डॉ. कौशिक वी. पण्डया

सहआचार्य, शिक्षा संकाय, पैसिफिक एकेडमी ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर

सारांशः–

प्रस्तुत शोध पत्र डॉ0 राधाकृष्णन् के शैक्षिक विचारों की आधुनिक भारतीय शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में सार्थकता पर आधारित है। डॉ. राधाकृष्णन ने छात्र संकल्पना, शिक्षक संकल्पना, छात्र–शिक्षक संबंध, सामान्य शिक्षा, उदार शिक्षा, व्यवसायिक शिक्षा, अध्यापकों की शिक्षा, धार्मिक शिक्षा, स्त्री शिक्षा, विश्वविद्यालयी शिक्षा व्यवस्था के संदर्भ में अपने महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किये। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग क अध्यक्ष के रूप में उन्होंने विश्वविद्यालय शिक्षा के विभिन्न पक्षों का अध्ययन किया। डॉ. राधाकृष्णन ने न केवल शैक्षिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया बल्कि उसे वास्तविक शैक्षिक परिस्थितियों में भी व्यवहृत किया। उन्होंने व्यावहारिक परिस्थितियों में शिक्षण करके अपने शैक्षिक विचारों का निर्माण किया। डॉ. राधाकृष्णन के स्वतन्त्रता संबंधी विचारों में व्यक्तिवाद तथा आदर्श दोनों का सम्मिश्रण मिलता है। उन्होंने कहा कि किसी देश की शैक्षिक, राजनैतिक, सामाजिक चेतना उस देश के विश्वविद्यालय की श्रेष्ठता के अभिन्न होते है।

मुख्य शब्दावलीः– दर्शनशास्त्र, शिक्षा, संप्रत्य, आत्म–ज्ञान, धर्म, शैक्षिक विचार, चरित्र निर्माण।

प्रस्तावनाः–

किसी विचार या योजना की सुसंगतता या प्रासंगिकता या सार्थकता उसकी पुष्टिकरण की शक्ति को प्रदर्शित करती है। वस्तुतः परिवर्तनशील जगत् में विचारों में परिवर्तन आना स्वाभाविक है, क्योंकि परिवर्तन प्रकृति का नियम है। मानव स्वभाव भी परविर्तनशील है। अतः सार्थकता या उपादेयता विचारों को अर्थपूर्ण एवं प्रयोजनशील बनाती हैं । वस्तुतः शिक्षा सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन का प्रमुख साधन होने के नाते समाज के रूपान्तरण का शक्तिशाली माध्यम है। उक्त कथन की पुष्टि में हम यूनेस्को के प्रतिवेदन (1978) के निम्न शब्दों को प्रस्तुत कर रहे हैं –

"शिक्षा स्वयं में एक विश्व भी है और विशाल विश्व का एक प्रतिबिम्ब भी है। अपने उद्देश्यों में योगदान करते हुए वह समाज के अधीन होती है, और विशेष रूप में वह यह सुनिश्चित करके कि अपेक्षित मानवीय संसाधनों का विकास होता है, समाज को अपनी उत्पादक शक्तियों के जुटाने में सहायता देती है। सामान्य रूप से यह कहा जा सकता है कि उसका उन पर्यावरणात्मक स्थितियों पर, जिनके अधीन वह रहती है, आवश्यक रूप से प्रभाव पड़ता है भले ही यह प्रभाव केवल उन व्यक्तियों के ज्ञान के द्वारा हो जिनका वह निर्माण करती है। इस प्रकार शिक्षा अपने स्वयं के रूपान्तरण तथा प्रगति की वस्तुनिष्ठ स्थितियों के निर्माण में योगदान करती है।"

डॉ0 राधाकृष्णन् के शैक्षिक विचारों की सार्थकता से पूर्व मैं प्रस्तुत शीषर्क के ''**आधुनिक शिक्षा**'' इन शब्दों को स्पष्ट करना चाहता हूँ यथा – ''आधुनिक'' – यह स्पष्ट है कि आज हम जिस समाज में निवास कर रहे हैं वह 17वीं – 18वीं–19वीं शती का या कोई अन्य समाज नहीं है। यों तो हर क्षण अपने में नूतन होता है, पूर्ण होता है। विकासवान परिप्रेक्ष्य में हर क्षण अतुलनीय होता है। आधुनिक से हमारा तात्पर्य एक ऐसा क्षण है, जो बीता नहीं है, बीतने में है। इस ''बीतने'' में वस्तुतः हम जी रहे हैं । हमारे जीवन के जीने के साथ ''बीतते क्षण'' का सम्बन्ध है। वह अनुपमेय भी है। वह क्षण अपने अनुकूल जीने के लिये हमे विवश करता हे। अवश होकर हम उसके पीछे दौड़ते रहते हैं। प्रतिरोध मृत्यु बन सकता है। अतः यह जानना कि वह क्षण जिसमें हम जी रहे हैं कैसा है – हितकारी होगा; इससे जीने के लिये दिशा – बोध होगा, हमें भविष्य के गन्तव्य का ज्ञान होगा। थोड़े से शब्दों में आज का हमारा वह क्षण ''होहल्ले'' का है। यह ''होहल्ला'' कोई भूत या हौआ नहीं है। वह आज के संदर्भ की अनिवार्य निष्पत्ति है। यह निष्पत्ति विज्ञान तथा भौतिकता की दौड़ का प्रतिफलन है। रेल, जहाज, बम, प्रक्षेपणास्त्र, स्पूतनिक आदि ने इसको रूप दिया है। आार्थिक महत्वाकांक्षाओं ने इस ''होहल्ले'' को अधिक प्रेय बना दिया है। राजनीति के तथाकथित पूँजीवाद और समाजवाद ने हमारे आधुनिक संदर्भ को विघटित कर दिया है। हमारा जीवन द्विविधा की दरार में पल रहा है। दूसरे शब्दों में वह संक्रमण काल में से होकर गुजर रहा है। आज हम जिस क्षण में साँस ले रहे हैं वह टूटते धार्मिक विश्वासों का, निष्ठाओं का संदर्भ है। इस संदर्भ में एक ओर राष्ट्रीय सीमाएँ विचलित हो रही हैं, दूसरी ओर सांस्कृतिक परम्पराएँ विघटित हो रही हैं। यह हम नहीं कह सकते कि इनमें संस्कार हो रहा है। हाँ, यह अवश्य माना जा सकता है कि इनमें दिन–ब–दिन ''संकरता'' आ रही है। यह ''संकरता'' ही आधुनिक संदर्भ की सबसे बड़ी विशेषता है।

समस्या कथनः–

''डॉ0 राधाकृष्णन् के शैक्षिक विचारों की आधुनिक भारतीय शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में सार्थकता''

अध्ययन के उद्देश्यः–

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के शैक्षिक विचारों की आधुनिक भारतीय शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में सार्थकता का अध्ययन करना है। शोधार्थी ने अपने इस अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास किया हैः–

1.आधुनिक भारतीय शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में डॉ0 राधाकृष्णन् के शैक्षिक विचारों की सार्थकता को देखना।

अध्ययन से सम्बन्धित परिकल्पनाः–

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति ऐतिहासिक एवं दार्शनिक प्रकार की है। अतः इसमें परिकल्पनाओं का प्रयोग न करके अध्ययन के उद्देश्यों पर महत्व दिया गया है।

अध्ययन का क्षेत्रः–

प्रस्तुत अध्ययन डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के उपलब्ध ग्रंथों व्याख्यानों आदि के शैक्षिक विचारों तक सीमित है।

सम्बद्ध शोध साहित्यः–

किसी भी शोध कार्य का अध्ययन करने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोंण से शोधार्थी ने डॉ0 राधाकृष्णन् के शैक्षिक विचारों की आधुनिक भारतीय शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में सार्थकता के संदर्भ में पूर्व शोध अध्ययनों की विषय–वस्तु की जानकारी पुस्तकों, पत्र पत्रिकाओं, शोध प्रबन्ध, लघु शोध प्रबन्ध, इन्टरनेट, शोध अध्ययन एवं प्रकाशित साहित्य के माध्यम से प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है– कैला देवी (1982), आर. पी. गुप्ता (1985), शर्मा, मुनेन्द्र (2000), भागवन्ती (1988), शर्मा, उमा रानी (1989), यादव वी. के. (2000)।

शोध विधि का चयनः–

प्रस्तुत शोधकार्य में दार्शनिक विधि, ऐतिहासिक विधि, विश्लेषण एवं विवेचन विधि का प्रयोग किया है।

डॉ0 राधाकृष्णन् के शैक्षिक विचारों की आधुनिक भारतीय शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में सार्थकता का अध्ययनः–

डॉ0 राधाकृष्णन् के शैक्षिक विचारों की आधुनिक भारतीय शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में सार्थकता का अध्ययन निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत किया गया हैः–

● **आधुनिक भारतीय शिक्षाः–**

1968 की शिक्षा–नीति लागू होने के बाद देश में शिक्षा का व्यापक प्रसार हुआ। पूरे देश में शिक्षा की समान संरचना 10+2+3 को लागू किया। इस संरचना के अनुसार विद्यालयी पाठ्यक्रम में छात्र–छात्राओं को एक समान शिक्षा देने के लिये व्यवस्था की गयी और विज्ञान, गणित तथा कार्यानुभव (Work Experience) को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया। उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में भी परिवर्तन करने के लिये प्रयास किये गये। साथ ही स्नातकोत्तर शिक्षा को उन्नत बनाने के लिये शोध के लिये अध्ययन केन्द्र स्थापित किये गये। देश की आवश्यकतानुसार शिक्षित जनशक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये कदम उठाये गये।

आज की परिस्थितियों ने शिक्षा को एक दुराहे पर ला खड़ा किया है। आज भारत राजनीतिक तथा सामाजिक दृष्टि से एक ऐसे दौर से गुजर रहा है जिसमें परम्परागत तथा मानव मूल्यों का ह्रास हो रहा है और राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति में निरन्तर बाधाएँ उत्पन्न हो रही हैं।

आज भारतीय शिक्षा जिन विभिन्न शिक्षा संस्थाओं तथा अन्य अनौपचारिक (Informal) साधनों से प्रदान की जा रही हे। यदि उसक अवलोकन किया जाय तो वह एक–दिन–सीरिज (One Day Series) तक सीमित हैं जिसमें बच्चे को दस या पन्द्रह प्रश्नों के उत्तरों को याद करना पड़ता है और वह उनमें से पाँच प्रश्नों के उत्तर परीक्षा–कक्ष में उगल देता है। ऐसा भी है शिक्षा आज इतनी व्यावसायिक हो गयी है कि छात्रों को टेण्डर – आधार पर नकल कराने के लिये सौदे किये जाते हैं। इनके आधार पर उनको परीक्षा में पास कराया जाता है और वे परीक्षा–परिणामों के आधार पर प्रमाण–पत्र एवं उपाधियाँ प्राप्त करते हैं।

● **शिक्षा का महत्वः–**

डॉ0 राधाकृष्णन् ने शिक्षा के महत्व को विभिन्न दृष्टिकोंण से स्पष्ट किया है। उन्होंने शिक्षा को मनुष्य तथा समाज का निर्माण करने वाला प्रमुख साधन माना है उनके अनुसार शिक्षा द्वारा मानव के मानसिक प्रशिक्षण के साथ–साथ, कल्पनाशक्ति तथा मनोभावों को निर्मल बनाया जाना चाहिये। शिक्षा का महत्व केवल ज्ञान तथा कौशल के विकास में नहीं है। इसे तो हमें सहयोगी जीवन के लिये तैयार करना चाहिये। शिक्षा हमें नैतिक गुणों के विकास के लिये प्रशिक्षित करे।

“If education is to help us to meet the moral challenge of the age and play its part in the life of the community, it should be liberating and life giving.”

● **शिक्षा का संप्रत्ययः–**

डॉ0 राधाकृष्णन् शिक्षा को जीवन–पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया मानते हैं जिसमें मानव शिक्षक से सीखता है, स्वयं सीखता है, जीवन तथा उसके अनुभवों से सीखता है, प्रत्येक क्षण, प्रत्येक कदम पर सीखता है, अपने घर, समुदाय, पत्र–पत्रिकाओं तथा अन्य इलैक्ट्रानिक तकनीकियों के माध्यम से सीखता है। इस प्रकार वह सतत् रूप से आजीवन सीखता रहता है। दूसरे शब्दों में डॉ0 राधाकृष्णन् के अनुसार, ‘‘सम्पूर्ण जीवन अनुभव है। इसका कारण शिक्षा है।’’

“All life is experience and therefore education.”

डॉ0 राधाकृष्णन् के उक्त विचार को शिक्षा–आयोग (1964–66) ने इन शब्दों में पुष्ट किया है –

'स्कूल की पढ़ाई के साथ ही शिक्षा समाप्त नहीं हो जाती, बल्कि वह एक जीवन व्यापी प्रक्रिया है। आज के व्यस्क को तेजी से बदलते हुए संसार और समाज की बढ़ती हुई जटिलताओं को समझने की आवश्यकता है। जो लोग परिष्कृततम शिक्षा पा चुके हैं, उन्हें भी लगातार सीखने की आवश्यकता है। ''

डॉ0 राधाकृष्णन् शिक्षा को रूपान्तरण की प्रक्रिया के रूप में देखते हैं। इसके माध्यम से व्यक्ति अपने जन्मजात स्वरूप को मानव स्वरूप में बदल सकता है। साथ ही वह अपने आन्तरिक स्वरूप को जानने में समर्थ होता है और स्वयं अपने अनुभवों से सीखकर प्राप्त की गई समझदारी को पारस्परिक क्रियाओं के माध्यम से ''ज्ञान'' की प्राप्ति कर सकता है। उनके अनुसार ज्ञान, विवेक के अभाव में कुछ भी नहीं है। इस प्रकार शिक्षा मानव के पूर्ण विकास की प्रक्रिया के रूप में कार्य करती है।

● शिक्षा के प्रयोजनः–

डॉ0 राधाकृष्णन् सूचना तथा तकनीकी योग्यता की अपेक्षा पारलौकिकता के ज्ञान पर बल देते हैं। ज्ञान एवं द्विता को साध्य स्वीकार नहीं करते वरन् उन्हें उच्चतर जीवन एवं दृष्टिकोंण की प्राप्ति का साधन मानते हैं। वे यह तो स्वीकार करते हैं कि आधुनिक समाज में ज्ञान तथा तकनीकी कौशल महत्वपूर्ण हैं। परन्तु वे उच्चतर दृष्टिकोंण के निर्माण में एक साधन के रूप में कार्य करें। उन्होंने विज्ञान को आध्यात्मिक जगत की जानकारी में सहायक माना है।

जिस प्रकार पदार्थ से जीवन, जीवन से बुद्वि और बुद्वि से मूल्यों की चेतना का विकास हुआ, उसी प्रकार मूल्यों की चेतना से ईश्वरीय अनुभूति का विकास हुआ। अर्द्व–मानव से मानव–जीवन का विकास हुआ है। इसी प्रकार मानव–जीवन से दैवी–जीवन का विकास होगा। यही उच्चतर जीवन या सर्वोच्च आध्यात्मिक आदर्श है। यही शिक्षा का प्रमुख प्रयोजन है।

● आत्म – ज्ञानः–

डॉ0 राधाकृष्णन् के अनुसार आत्म–ज्ञान व्यक्ति को सम्पूर्ण मानवता के सम्पर्क में लाने में सहायक है। साथ ही यह मानव आशाओं और आकॉंक्षाओं की पूर्ति में सहायता देता है। आत्म–ज्ञान स्वतंत्रता के वातावरण में प्राप्त हो सकता है। अतः शिक्षा द्वारा व्यक्ति को चिन्तन एवं निर्णय करने की स्वतंत्रता प्रदान करें। वास्तविक स्वतंत्रता तो आध्यात्मिक स्वतंत्रता है सच्चा स्वराज्य तो मनुष्य की आत्मा का स्वराज्य है। व्यक्ति ही संसार का केन्द्र बिन्दु है। जीवन की अभिव्यक्ति उसी में होती है। सत्य का दर्शन व्यक्ति को होता है।

डॉ0 राधाकृष्णन् का मानव की आत्मिक शक्ति में अपार विश्वास था। वे विज्ञान, तर्क, परम्परा सभी से ऊपर मन की आत्मिक शक्ति को स्थान देते थे। उनका कहना है कि विज्ञान विश्व की परिधि, वस्तुओं के बाह्य आकार, ब्रह्माण्ड की विविधता और बहुरूपता पर दृष्टिपात करता है, किन्तु अस्तित्व के केन्द्र को, जहाँ से ये समस्त वस्तुऐं आती हैं और निकलती हैं, केवल एकान्त चिन्तिन द्वारा महसूस किया जा सकता है।

● चरित्र – निर्माणः–

डॉ0 राधाकृष्णन् ने अपने युग की परिस्थितियों से प्रभावित होकर कहा, ''भारत सहित सारे संसार के कष्टों का कारण यह है कि शिक्षा का सम्बन्ध नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों की प्राप्ति से न रहकर केवल मस्तिष्क के विकास से रह गया है।'' उन्होंने इस सूत्र में अपनी आस्था व्यक्त की ''**चरित्र ही भाग्य है''।** उन्होंने चरित्र को व्यक्ति तथा राष्ट्र दोनों के लिये अनविार्य माना।

● सामाजिक मुक्तिः–

डॉ0 राधाकृष्णन् एक ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते थे जिसमें विभिन्नताओं के रहते हुए सामाजिक एकता हो। इसके लिये वे समाज के रूपान्तरण पर बल देते हैं। इसके लिये वे छात्रों को सामाजिक वातावरण के साथ अनुकूलन के लिये प्रशिक्षण देने पर बल नहीं देते वरन् उसके सुधार पर बल देते हैं। डॉ0 राधाकृष्णन् सामाजिक रूपान्तरण के लिये सत्य की खोज तथा सामाजिक उन्नति के कार्यो के रूप में शिक्षा की कल्पना करते हैं जिससे एक सभ्यता का निर्माण किया जा सके।

● **शिक्षा की विषय–वस्तुः–**

डॉ0 राधाकृष्णन् ने शिक्षा में समग्र उपागम (Wholistic approach) का प्रतिपादन किया है। उन्होंने मानव मन की एकता पर बल देकर ज्ञान को अन्योन्याश्रित माना है। उनके अनुसार, हम जिन विषयों का अध्ययन करें, वे अन्तः पाठ्यक्रम उपागम (Interdisciplinary approach) पर बल देते हैं।

आधुनिक भारतीय शिक्षा के पाठ्यक्रम में विषयों की भरमार है। साथ ही दुख का विषय यह है कि उनको एक स्वायत्त इकाई के रूप में पढ़ाया जाता है। डॉ0 राधाकृष्णन् के अनुसार शिक्षा एकात्मकता तथा समग्रता के लिये एक खोज है। अतः पूर्ण मानव के विकस के उद्देश्य की प्राप्ति समग्र या एकीकृत पाठ्यक्रम से प्राप्त की जा सकती है।

डॉ0 राधाकृष्णन् ज्ञान को एक अविभाज्य इकाई के रूप में देखते हैं। साथ ही विज्ञान तथा मानवशास्त्रों में संतुलन स्थापित करने के समर्थक हैं। डॉ0 राधाकृष्णन् के अनुसार आधुनिक विश्व मे सफल जीवन–यापन करने के लिये निम्नलिखित तीन प्रमुख ज्ञान–क्षेत्रों में से ज्ञान का चयन करना चाहिये –

अ – विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी।

ब – सामाजिक विज्ञान – मनोविज्ञान, राजनीति विज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र, सामाजिक दर्शन ताकि सामाजिक नीतिशास्त्र।

स – मानविकी शास्त्र – भाषा एवं साहित्य, ललित कलाएँ, नीतिशास्त्र, दर्शन तथा धर्म।

● **शिक्षण–विधियाँः–**

डॉ0 राधाकृष्णन् ने शिक्षण–विधियों के निर्धारण में शिक्षक की भूमिका को महत्वपूर्ण माना है। शिक्षक विषय–वस्तु तथा छात्रों की आवश्यकता के अनुसार इसका निर्धारण करे। शिक्षक विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर छात्रों के मन–मस्तिष्क को ढालने के लिये विधियों का निर्धारण करे जिससे वह उनको भविष्य की चुनौतियों को झेलने में समर्थ बना सके। उन्होंने वाचन, चिन्तन–मनन, व्याख्यान, लिखित कार्य, ट्यूटोरियल आदि पर बल दिया। डॉ0 राधाकृष्णन् छात्र को मशीनी आदमी बनाने की अपेक्षा चिन्तनशील, निर्णयशील तथा क्रियाशील बनाना चाहते हैं।

● **शिक्षा की संरचनाः–**

डॉ0 राधाकृष्णन् ने 10+2+3 की शैक्षिक संरचना का प्रतिपादन किया जिसकी प्रासंगिकता को स्वीकार करके शिक्षा–आयोग (1964–66) में भी इसके लिये सुझाव दिया। 1968 तथा 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों ने इसको लागू करने पर बल दिया। आज भारतीय शिक्षा में यह शैक्षिक संरचना लागू है।

● **शिक्षकः–**

भारत की समस्याओं और मानव–संस्कृति के इतिहास को देखते हुए डॉ0 राधाकृष्णन् के कार्य और विचार सबसे अधिक प्रासांगिक हैं। देश के जीवन में विभिन्न क्षेत्रों और स्तरों पर आज जो अन्धकार और निराशा हमें घेरे हुए है, उसमें आशा की किरण शिक्षा–संस्थाओं तथा शिक्षकों से ही प्रकाशित हो सकती हैं । उन्होंने शिक्षा संस्थाओं को राष्ट्र का निर्माता स्वीकर किया।

"A Nation is built in its educational institutions. We have to train our youth in them. We have to impart them the tradition of the future".

इन संस्थाओं में राष्ट्र का निर्माण करने वाला कौन है? डॉ0 राधाकृष्णन् शिक्षक को राष्ट्र के भावी नागरिकों का निर्माण कर्त्ता मानते हैं। वे मानवतावादी विचारक तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति के समर्थक होने के नाते शिक्षक को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करते हैं।

''जिस व्यक्ति की आत्मा से दूसरी आत्मा में शक्ति का संचार होता है, वह गुरू कहलाता है और जिसकी आत्मा में यह शक्ति संचरित होती है, उसे शिष्य कहते हैं''।

डॉ0 राधाकृष्णन् के शिक्षक–छात्र सम्बन्ध को अभिभावक एवं बालक के रूप में स्वीकारा है। वे शिक्षक को बालाकें का दूसरे माता–पिता मानते हैं। उन्होंने शिक्षक के छात्र के प्रति निम्न कर्तव्य निर्धारित किये –

1.शिक्षक छात्रों के मनोविाान को जाने।
2.शिक्षक छात्रों के मित्रभाव उत्पन्न करे तथा उसे बनाये रखे।
3.शिक्षक अपने मन में छात्र के लिये प्रेम रखे।

● **अनुशासनः–**

डॉ0 राधाकृष्णन् चाहते थे कि प्राचीन काल के अनुसार पुनः गुरू–शिष्य के बीच में आदर की भावना जाग्रत हो। खेद है कि इस आधुनिक युग में प्राचीन शिक्षा–पद्धति की स्थापना नहीं हो सकती। परन्तु उनका विश्वास था कि ऐसे शिक्षक अवश्य मिल सकते हैं जो छात्र के मित्र, पथ–प्रदर्शक तथा सहायक बन सकें। उन्होंने आधुनिक शिक्षा–संस्थाओं में अनुशासन की स्थापना हेतु निम्न बातों पर बल दिया –

1.नैतिक शिक्षा दी जाय। परन्तु यह कार्य सुझावों तथा उदाहरणों के माध्यम से किया जाना चाहिये।
2.सत्संग के प्रभाव को स्वीकारा।
3.श्रेष्ठ पुस्तकों के अध्ययन द्वारा।
4.महान् व्यक्तियों के बारे में जानकारी प्रदान करके।

● **नारी शिक्षाः–**

डॉ0 राधाकृष्णन् ने नारी शिक्ष को राष्ट्र–निर्माण के लिये महत्वपूर्ण माना हैं

“There can not be an educated people without educated women”.

उन्होंने स्त्री–शिक्षा को परिवार–निर्माण के लिये महत्वपूर्ण माना है। इस दृष्टि से उन्होंने उनकी शिक्षा के लिये विशिष्ट पाठ्यक्रमों के आयोजन पर बल दिया हैं इनमें गृह–अर्थशास्त्र, नर्सिग प्रशिक्षण, शिक्षक प्रशिक्षण तथा ललित कलाओं को स्थान प्रदान किया है। शिक्षा अयोग 1964–66 ने डॉ0 राधाकृष्णन् के विपरीत स्त्री शिक्षा के क्षेत्र को विस्तृत बनाने पर बल दिया है।

परिस्थितियों के परिवर्तन ने स्त्री–शिक्षा के क्षेत्र में आज महान परिवर्तन ला दिये हैं। परन्तु डॉ0 राधाकृष्णन् ने नारी–शिक्षा के पारिवारिक क्षेत्र पर ही बल दिया था। वह क्षेत्र आधार है। अतः आधार के रूप में उनके विचार प्रासांगिक हैं। परन्तु समय की परिवर्तनशीलता के अनुकूल नारी–शिक्षा की भूमिकाओं में परिवर्तन करने होंगे।

● **ग्रामीण विश्वविद्यालयः–**

डॉ0 राधाकृष्णन् उन चिन्तकों में अग्रणी हैं जिन्होंने भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल ग्रामीण समाज के उत्थान के लिये महती कार्य किया। भारतीय कृषि प्रधान देश है। अतः उसकी उन्नति एवं आवश्यकताओं के लिये आवश्यक कदम उठाने होंगे। ग्रामीण भारत की सामान्य उन्नति के लिये कुशलता और प्रशिक्षण की सीमा और गुण में निरन्तर विकास करना होगा। इनको प्रदान करने के लिये और शिक्षित नागरिकों की आवश्कताओं को पूर्ण करने के लिये ग्रामीण कॉलेजों तथा विश्वविद्यालय की पद्धति आवश्यक है। अतः इस दिशा में कार्य करना वाछंनीय है –

“Rural India is a great reservoir of creative life but the pattern that life shall adopt is not yet determined..... So far as our rural population is concerned, the development, enlargement and refinement of that design should largely be the work of rural education.”

डॉ0 राधाकृष्णन् के ग्रामीण विश्वविद्यालय के विचार को राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1986 में स्वीकार किया गया –

“The new pattern of the Rural University wil be considered and developed on the lines of Mahatma Gandhi”s revolutionary ideas of education so as to take up the challenges of microplanning at grass root levels for the transformation of rural areas”.

इस स्थिति से दूर होने के लिये उन्होंने आध्यात्मिक आस्था की आवश्यकता पर बल दिया। यह आस्था विवेकशील है जो सम्पूर्ण मानवजाति में निष्ठा रखती है। इस प्रकार इस महान् शिक्षाशास्त्री एवं विचारक ने वर्तमान विपन्न स्थिति में परिणाम के लिये आध्यात्मिक नवजागरण को माध्यम बनाने पर बल दिया। इस नवजागरण के लिये शिक्षा को महत्वपूर्ण साधन बताया। आज हमें अपनी शिक्षा में इसको स्थान देना होगा। साथ ही मानव के विकास की भावी सम्भावना के प्रति विश्वास जाग्रत करना होगा।

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षः–

● शोधकर्त्ता ने अपने अध्ययन में पाया कि शिक्षा को जीवन से पृथक नहीं किया जा सकता इसलिए शिक्षा जीवन के अनुसार ही होनी चाहिए अर्थात् शिक्षा मनुष्य एवं प्रकृति से संबंधित होनी चाहिए जबकि वर्तमान में शिक्षा का जीवन से कोई तालमेल नहीं किताबी ज्ञान को ही शिक्षा माना जा रहा है।

● शोधकर्त्ता ने पाया कि बालक की शिक्षा प्राकृतिक ढंग से होनी चाहिए, इससे बालक और प्रकृति एवं वातावरण के बीच सामंजस्य स्थापित होगा और बालक वास्तविक जीवन या संसार का ज्ञान प्राप्त कर सकेगा। जबकि वर्तमान में बालक को चारदीवारी विद्यालयों में बंद कर शिक्षा के नाम पर औपचारिकता निभाई जा रही है।

● वर्तमान शिक्षा पाठ्यक्रम के अनुसार ही आदर्शों, परम्पराओं, प्रथाओं और रीति–रिवाजों को स्थान दिया जाना चाहिये।

● शोधकर्त्ता ने अपने अध्ययन में पाया कि शिक्षार्थी शिक्षक संबंध, पिता–पुत्र तुल्य तथा शिक्षण विधियाँ, मनोवैज्ञानिक तकनीकों पर आधारित होनी चाहिए।

● डॉ. राधाकृष्णन ने शिक्षा का केन्द्र विद्यार्थी को माना है। अतः विद्यार्थी में नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, व्यावसायिक आदि मूल्यों का संचरण करने का प्रयास करना चाहिए।

● उनके अनुसार शिक्षण संस्थाओं का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को प्रकृति–प्रेम, मानवतावाद एवं समन्वय की शिक्षा प्रदान करना होना चाहिए।

संदर्भः–

1.Inaugural Address at Meerut collage Diamond jubilee Celebration Dec. 20, 1953.

2.Anand, V. (2011). Dr Radhakrishnan"s Contribution to Contemporary Thought, Main stream, VOL L, No 1, December 24, Retrieved on 06 February 2015, from: http://www.mainstreamweekly.net/article3206.html3

3.Chinchu, K.R. (2013) Dr. S. Radhakrishnan"s Educational Ideas, Heart Beats, Retrieved on 05 February 2015, from http://chinchukr21.blogspot.in/2013/06/dr-sradhakrishnans-educational- ideas.html

4.D. Anjaneyulu (1996), Radhakrishnan - The Educationist, TRIVENI, Retrieved on 06 February 2015, from: http://yabaluri.org/TRIVENI/CDWEB/radhakrishnantheeducationistapr96.html

5.Dr. Santosh Kumar Behera (2015) Educational Thoughts of Dr. Sarvapalli Radhakrishnan International Research Journal of Interdisciplinary & Multidisciplinary Studies (IRJIMS) ISSN: 2394-7969 (Online), ISSN: 2394-7950 (Print) Volume-I, Issue-I, Page No. 196-205

6. भण्डारी, डी0 आर0, डॉ0 राधाकृष्णन् की देन प्रज्ञा (सर्वपल्लि राधाकृष्णन् स्मृति अंक काशी हिन्दू वि0 वि0 पत्रिका, अंक 34 भाग –2, 2015)

7. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय, माध्यमिक शिक्षा आयोग रिपोर्ट, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली 2015।

8. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय, शिक्षा–आयोग रिपोर्ट (1964–66) (शिक्षा एवं राष्ट्रीय विकास) दिल्ली, 2015।

9. भारत सरकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग, नई दिल्ली, मई 2015।.

10. भार्गव, वी.एस., ''आधुनिक भारत''' कॉलेज बुक डिपो, जयपुर 1970.